BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

''समसामयिक यथार्थ का सशक्त दस्तावेजः 'योद्धा''

डॉ. गोवर्धन लाल डांगी
समीक्षक
अतिथि व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय परतापुर (गढ़ी) बांसवाड़ा

डॉ. सूर्यदीन यादव किसान के घर प्लवित होकर हिन्दी और गुजराती साहित्य में अपना योगदान देकर साहित्य सृजन की महती भूमिका अदा कर रहे हैं। आप प्रकृति के हमजोली किसान पुत्र होकर उत्तर भारत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और निम्न–मध्यम शोषित समाज की आवाज को खेत–खलिहानों, गांवों से दूर शहरों की भोग विलास भरे वातावरण से लेकर वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, कपट, शोषण और स्वार्थ सिद्धि के लिये आम आदमी के साथ किये जाने वाले अत्याचार और षड्यंत्र का पर्दाफाश किया है।

डॉ. सूर्यदीन यादव बहु प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व का जन्म सन् 15 जुलाई 1952 ई ढाहा गाँव, बधुआकलां, सुलतानपुर (उ.प्र.) सामान्य किसान परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा– एम ए, बी.एड, पीएच.डी. आप गुजरात की धरती से साहित्य में लम्बे अरसे से सेवा कर रहे है । आपके साहित्य में माटी की महक के साथ–साथ गरीब की झोपडी की आत्मा बसती है।

आपने अपने साहित्य में समाज के मनोवैज्ञानिक यथार्थ परिदृश्य के साथ–साथ, रागात्मक और संवेदनशीलता को भी उकेरा है । आप अपनी प्रतिभा से जनता की व्यथा–कथा को अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य को समृद्ध किया है। आपने लोक कल्याण के उदद्देश को पूर्ण किया है। आपके साहित्य में समसामयिक समस्याओं के साथ लोक हित उद्देश को पूर्ण किया हैं। आपका अनुभव इतना गहन और चिंतनीय है कि आंखों के सामने कोराना महामारी का भयंकर रूप दिखायी देता है।

डॉ. सूर्यदीन यादव जी के कृतित्व पर संक्षेप में वर्णन करना आवश्यक है–

कविता :– हिन्द वाहिनी (1997), फागुन बीते जा रहे (1993), दूसरी आँख (पुरस्कृत) 1994, लगे मेरा गाँव – (2001), बूँद (2005), उछलती हुई लहरें(2005), प्रेरणा (2006), हम खून लाल रंग के (2008), राज (2010) बच्चे जागते हुए (2015) सपनों का गाँव (2016), माटी कहे पुकार (2017), कलम देती रोशनी (2020), मील भर का सफर (2021)

कहानी :– चित्रित नवीन कहानियाँ (1969), पहली यात्रा – 1991 , वह रात (1998) दूसरा सफर (2005), चौपार (2010), मेरी प्रिम कहानियाँ (2010) ,गुजराती में(2011), नया रास्ता (2014), गांव परिवेश की कहानियां (2018), सूर्यदीन यादवः स्त्रीपक्षधरता की कहानियाँ (2018) माटी का टीका (2021)

उपन्यास– दूसरा आंचल (1991), मां का आँचल (1992), ममता (2003), अंधेरा जहां उजाला (2003), चौराहे के लोग (2004), प्रेम स्त्रोत (2005), जमीन (2006) एक सफर के मुसाफिर (2008), परछाइयाँ (2013), माटी देखती है (2013), घर के सामने (2013), माटी की देह (2016) विष बीज (2016), दिन थकता हुआ (2019), मकान (2019) राष्ट्र देवता (2020), योद्धा (2021)

नाटक :– कांटे बने फूल (2019)

समीक्षा:– कथाकार रामदरश मिश्र (1987), सुदर्शन मजीढिया का औपन्यासिक शिल्प (1999), रामदरश मिश्र की कविता :: सूजन के रंग (2005), रोजमर्रा की जिंदगी बनाम आज की कविता (2006), नये औपन्यासिक मूल्य : रंगों की पहचान (2012). आलोचना के आवर्त : नये सौंदर्य मूल्य (2018)

निबन्ध :– प्रारंभिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व (2000), जहाँ देने की अपेक्षा पाया (2007), घर धरौदा (2011), उसी की पूजा (2013) माटी के रंग(2017), रचना मात्राः साहित्य की ऊर्जा (2021)

सम्मान :– हिन्दी साहित्य अकादमी गांधीनगर (गुजरात), जैमिनी साहित अकादमी पानोपत, हिन्दी साहित्य परिषद् अहमदाबाद, विद्यापीक अहमदाबाद '' लेखक मंच बैतूल सहित हैदराबाद, सुलतानपुर, वाराणसी, इलाहबाद, जबलपुर, नडियाद, लखनऊ, कानपुर, बस्ती, मुरादाबाद, देहरादून उदयपुर फिरोजाबाद आदि की 25 संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

आपने अपने उपन्यासों में घर, खेत खलिहानों गॉवों और शहरो के बदलते परिवेश को उकेरा है। मानवीय संवेदना और शिल्प को एक नया स्वर प्रदान किया है। वसतुतः उपन्यासों में काव्यात्मकता के साथ आम बोल चाल देशज लोक्तियॉ, मुहावरे और कहावतों के प्रयोग से आपके उपन्यासों में सजीवता आ गई है। आपकी लेखनी में अपने गांव, अंचल एवं संस्कृति को सजीव करने की अद्‌भुत क्षमता है। ऐसा लगता है मानो प्रत्येक पात्र वास्तविक जीवन जी रहा हो । परिवेश और पात्रों का इतना सुगम चित्रण दुर्लभ है। आपका 'योद्धा' उपन्यास कोरोना काल की विभिषिका का बेमिसाल चित्रण करता है। महामारी के दौर में पुरे विश्व में लाकडाउन की वजह से भूखमरी की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा। कोरोना काल जीवन संघर्षो का काल रहा है।

''योद्धा' उपन्यास पौराणिक कथानकों के माध्यम से आधुनिक विश्व की महामारी की विभिषिका पर विजय प्राप्त करने का संदेश देता है। उपन्यास में फैंटेसी के माध्यम से गावों और शहरों की बिगडती स्वास्थ्य, व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास का पात्र मनु स्वयं लेखक है। जिन्होंने कोरोना काल में रात–दिन ईसानियत की सेवा करने वाले को योद्धा कहा गया है। योद्धा उपन्यास से कामायनी' की पक्तियाँ याद आती है–

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

’ हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह,

एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलम प्रवाह!

कोरोना– विश्वयुद्ध है। जल, थल और वायु सब जगह कोरोना का कहर बरस रहा है। चारों ओर हाहाकार मच गया । जहाँ हर देश अपनी जनता को बचाने में लगा था, वहीं दूसरी ओर कुछ देश पडौसी देशों में घुसपैठ, आतंक और महामारी को फैलाने का भरसक प्रयास कर रहे थे। इस महामारी ने मनुष्य मात्र के स्वप्नों को अंधकार में डाल दिया, नींद हराम कर दी, छुआछूत से भी ज्यादा संक्रामक रही है। हर मर्ज की दवा है लेकिन उसकी कोई दवा नहीं है। कोरोना योद्धा 24 घण्टे सेवा कर उसे हराने का प्रयत्न करते रहे है। कोरोना की जंग लड़ते–लड़ते डाक्टर्स, सुरक्षा दल, हर विभाग के सरकारी, गैर सरकारी कर्मचारी योद्धा शहीद हो जाते हैं। जनता को जागरूक करने में मिडिया कर्मचारियों ने परदे पर अभक संवाद, चर्चा, वार्तालाप कर अहम भूमिका निभायी है।

लेखक में अपने उपन्यास ‘योद्धा’ में कोरोना महामारी से लड़ने वाले हर इंसान को योद्धा कहा है। कोरोना जैसी महामारी मलेरिया और हैजा सन् 1921 ई. में आया था, घर–घर लाशों के कंकाल, सुने दरवाजे, कोई रोने या लाशों को छुने तक नहीं आया था। कोरोना काल में भी चिकित्सा कर्मचारियों ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर मानवता को बचाने अथक प्रयास किए।

‘योद्धा’ उपन्यास कोरोना को केन्द्र में रखकर लिया गया है। कथानक वायरस के रूप में चीन से आया है। यह एक अदृश्य वायरस है जिससे सारी दुनिया त्रस्त है, परेशान है, दुखी है, बेबस है, भंयकर त्रासदी की चपेट में है। इससे हर देश, समाज, परिवार, गाँव, व्यक्ति प्रभावित हुआ है। कब किसे कोरोना अपनी गोद में समा लें, जकड़ ले, अपना भोजन बना ले, कहा नहीं जा सकता । कारण यह है कि इसके लक्षण दिखाई नहीं देते जो प्रायः सदियों से चली आ रही सर्दी, खाँसी, बुखार जैसे लक्षण कोरोना के भी है।

भारत में भी कोरोना ने कहर मचाना शुरू किया। इससे जन इतना भयभीत हो गया कि घर से बाहर सुनसान रेगिस्तान जैसा तपती सडके जनशून्य सी दिखाई देने लगी थी। भारत में कोरोना का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को सामने आया था। जब गायिका कनिका कपूर संक्रमित हुई तब सरकार हरकत में आयी । 22 मार्च 2020 को ‘जनत कफ्र्यू’ की । प्रधामंत्री जी ने 24 मार्च 2020 को अपने सम्बोधन में 25 मार्च से 14 अप्रैल तक लॉकडाउन की घोषणा कर दी। देश में आवागमन के सारे साधन बंद हो गये। कल कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों ने अपने गाँव वापसी शुरू कर दी। इस पैदल यात्रा में देश विभाजन की त्रासदी से भी गहरा वातावरण पैदा हो गया था । ऐसी पलायन की आपतिजनक स्थिति का किसी को भनक तक नहीं लगा। रास्ते चलते कई माताओं–बहनों ने दम तोड़ दिया। रास्ते

चलते भूख से शहीद श्रमिकों की दशा पर सरकार में तनिक भी विचार नहीं किया फटे जूतों से मीलों की यात्रा की, रास्ते में गर्भवती माताओं की पीड़ा आह भरती, बच्चों के भूख से लाचार हारे, हे राम, हे राम, करते राम को प्यारे हो गये । कोरोना जीव मात्र के चारों ओर घुमता रहा मनुष्य को अपने मौत के जाल में जकड़ता रहा। 'योद्धा' उपन्यास कोरोना महामारी के इर्द–गिर्द कथानक को लेकर लिखा गया हैं। कोरोना काल में प्रधानमंत्री ने एक मंत्र उच्चारित किया जिसका जनता ने अक्षरशः पालन किया जिसे 'नमो मंत्र' कहा गया। योद्धा उपन्यास से रेणु की कहानी 'पहलवान' की ढोलक याद आती है। ढोलक ने संजीवनी का काम लिया। प्रधानमंत्री जी ने हाथ जोड़कर के नमस्कार करते हुए कहा कि–''मैं आप सबके घर का एक सदस्य होने के नाते करबद्ध प्रार्थना करता हूँ आप से कि घर में ही रहें और कोरोना से युद्ध करके उसे घर और देश, मन से भगायें ।''

यह नमो मंत्र देश में पूरी तरह लागू हो गया । इनके द्वारा बताये गये सभी कार्य किये गये । थाली बजाई गई, दीप जलाये गये, यदि कुछ चलती रही तो बस सहमी डरी हुई साँसें । एक ओर नमो मंत्र अविवरणीय था तो दूसरी ओर ढाढ़स। निराला के काव्य 'राम की शक्ति पूजा' की पंक्तियाँ याद आती है–

'' शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन !

नमो द्वारा 'लॉकडाउन 'के दुष्काल की विभीषिका को झेलते हुए, जनता को संजीवनी का मंत्र दिया है। आज भी कोरोना का प्रकोप गया नहीं है। नये रूप में हमारे सामने आ गया है ओमिक्रॉन । वह सर्वत्र सभी को दबोच रहा है। लाखों रोज इसकी चपेट में आ रहे है। अभी तक इसकी कोई कारगर औषधि नहीं बन पाई है। कुछ भी हो कोरोना का भूत हमेशा की तरह दिमाग में सवार है।

''कोरोना योद्धा संघर्ष '' नामक स्थल पर लेखक ने मनु (स्वयं लेखक) नायक स्वीकार करता हुआ कहता है कि –''लिखकर वह कोरोना को भगाना चाहता है। इस संघर्ष को शीघ्र ही लिख पाठको तक पहुँचाना चाहता है, जिसे पढ़कर पाठक वर्ग भी कोरोना के सामने संघर्षरत रहकर खुद को महामारी से बचा सकें ।''

'योद्धा 'उपन्यास वर्तमान समय में कोरोना महामारी से उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करता है। विभिन्न विश्राम स्थलों के माध्यम से कोरोना के संदर्भ में प्रायः उन सभी समस्याओं को एकत्रित किया गया है। जो आम जनता को टी.वी के परदे पर, समाचार पत्रों में या अन्य सोशल कि मीडिया के माध्यम से ज्ञात होती रही है। साहित्यकार का प्रमुख उद्देश्य आम जनता को कोरोना के भय से मुक्त करना है। लेखक स्वयं कोरोना योद्धा है, इस उपन्यास के माध्यम से जनता को संजीवनी देने का काम किया है। इस विकट परिवेश में जीने वाला हर मनुष्य अपनी दोहरी जिंदगी जी रहा है या किस समय काल के

गर्त में कोरोना खा जाए। मौत आंखों के सामने हमेशा ताड़व करती रही है। लेखक ने दोहरी जिंदगी के किरदारों को जीवन जीने की राह दिखायी है। इन्हीं बातों को सूर्यदीन यादव में सफलतापूर्वक रूपायित किया है। उपन्यास खडी बोली में रचित सरल है, ग्रामीण जीवन के चीतेरे सहित्यकार ने ऑचलिक शब्दो का अधिकता से प्रयोग किया है। बीच–बीच में कबीर की बानियाँ, मुहावरें, कहावतें और ठेठ माँ के दूध की ग्रामीण भाषा का कुशलता से प्रयोग किया है। यह उपन्यास नये युग में नई कथा शैली में रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक उपनयास लिखा है। मानवता के पोषक यादव जी ने 'योद्धा' उपन्यास आने वाली पीढ़ी को नया संदेश दिया है।

पुस्तकः–'योद्धा'

लेखकः– डॉ.सूर्यदीन यादव

प्रकाशकः– रश्मि प्रकाशन

कृष्णनगर, लखनऊ (उ.प्र.)

प्रकाशन4 वर्ष– 2021